''मीठे बच्चे – तुम बाप को याद करो, यही याद विश्व के लिए योगदान है, इसी से विश्व पावन बनेगा, बेड़ा पार हो जायेगा''

प्रश्नः- किन बच्चों की सम्भाल अन्त समय में स्वयं बापदादा करते हैं?

उत्तरः- जो बच्चे बहुत समय से कांटों को फूल बनाने की सर्विस में तत्पर रहते हैं, बाप के पूरे-पूरे मददगार हैं, ऐसे बच्चों की अन्त समय में बाप स्वयं सम्भाल करते हैं। बाबा कहते – मैं अपने मददगार बच्चों को वन्डरफुल सीन-सीनरियाँ दिखलाकर खूब बहलाऊँगा। वह अन्त में बहुत सुख देखेंगे। साक्षात्कार करते रहेंगे। 2- जिन्हें ''एक बाप दूसरा न कोई'' यह पाठ पक्का है, ऐसे बच्चों को ही बाप की मदद मिलती है।

गीतः- प्रीतम आन मिलो...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बाप की याद में रहना है और सबको याद दिलाना है, यही दान करते रहना है। बाप पर बलि चढ़कर फिर ट्रस्टी हो सम्भालना है।
2) साक्षी हो हरेक एक्टर का पार्ट देखना है। हम पार्ट पूरा कर खुशी से वापस जा रहे हैं – इस स्मृति में सदा रहना है।

वरदानः- सदा बाप समान बन अपने सम्पन्न स्वरूप द्वारा सर्व को वरदान देने वाले वरदानी मूर्त भव

भारत में विशेष देवियों को वरदानी के रूप में याद करते हैं। लेकिन ऐसे वरदानी मूर्त वही बनते हैं जो बाप के समान और समीप रहने वाले हों। अगर कभी बाप समान और कभी बाप समान नहीं लेकिन स्वयं के पुरुषार्थी हैं तो वरदानी नहीं बन सकते क्योंकि बाप पुरुषार्थ नहीं करता, वो सदा सम्पन्न स्वरूप में है। तो जब समान अर्थात् सम्पन्न स्वरूप में रहो तब कहेंगे वरदानी मूर्त।

स्लोगनः- याद की तीव्र दौड़ी लगाओ तो बाप के गले का हार, विजयी मणके बन जायेंगे।

''मीठे बच्चे – माया की पीड़ा से बचने के लिए बाप की शरण में आ जाओ, ईश्वर की शरण में आने से 21 जन्म के लिए माया के बंधन से छूट जायेंगे''

प्रश्नः- तुम बच्चे किस पुरुषार्थ से मन्दिर लायक पूज्यनीय बन जाते हो?

उत्तरः- मन्दिर लायक पूज्यनीय बनने के लिए भूतों से बचने का पुरुषार्थ करो। कभी भी किसी भूत की प्रवेशता नहीं होनी चाहिए। जब किसी में भूत देखो, कोई क्रोध करता है या मोह के वश हो जाता है तो उससे किनारा कर लो। पवित्र रहने की स्वयं से प्रतिज्ञा करो। सच्ची-सच्ची राखी बांधो।

गीतः- तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) श्रीमत पर पतित मनुष्यों को पावन देवता बनाने की सेवा करनी है। बाप का पूरा-पूरा मददगार बनना है।

2) ज्ञान सागर का सारा ज्ञान हप करना है। बाप की याद से विकर्मों को दग्ध कर विकर्माजीत बनना है।

वरदानः- कोई भी ड्युटी बजाते हुए स्वयं को सेवाधारी समझ सेवा करने वाले डबल फल के अधिकारी भव

कोई भी कार्य करते, दफ्तर में जाते या बिजनेस करते – सदा स्मृति रहे कि सेवा के लिए यह ड्युटी बजा रहे हैं। सेवा के निमित्त यह कर रहा हूँ – तो सेवा आपके पास स्वत: आयेगी और जितनी सेवा करेंगे उतनी खुशी बढ़ती जायेगी। भविष्य तो जमा होगा ही लेकिन प्रत्यक्षफल खुशी मिलेगी। तो डबल फल के अधिकारी बन जायेंगे। याद और सेवा में बुद्धि बिजी होगी तो सदा ही फल खाते रहेंगे।

स्लोगनः- जो सदा खुशहाल रहते हैं वह स्वंय को और सर्व को प्रिय लगते हैं।

''मीठे बच्चे – अमृतवेले उठ मेडीटेशन में बैठो, विचार करो मैं आत्मा हूँ, हमारा बाबा बागवान है, वही खिवैया है, मैं उसकी सन्तान हूँ, मालिक बन ज्ञान रत्नों का सिमरण करो''

प्रश्नः- किस एक बात का महत्व दुनिया में भी है तो बाप के पास भी है?

उत्तरः- दान का। तुम बच्चों को रहमदिल बन सबके ऊपर तरस खाना है। सबको अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देना है। दानियों की बहुत महिमा होती है। अख़बार में भी उनका नाम निकलता है। तो तुम्हें भी सबको दान करना है अर्थात् मेडीटेशन सिखलाना है।

गीतः- मुझको सहारा देने वाले...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) अमृतवेले उठ याद में बैठ ज्ञान का रमण करना है। ज्ञान धन को भी याद करना है तो ज्ञान दाता को भी याद करना है।

2) ईश्वरीय नशे में रहकर सेवा करनी है। सबको मेडीटेशन करने की सहज विधि समझानी है। एकमत होकर रहना है।

वरदानः- रूहानी प्रसन्नता के वायब्रेशन द्वारा सर्व को शान्ति और शक्ति की अनुभूति कराने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप भव

जो परमात्म प्राप्तियों से सम्पन्न, सर्व प्राप्ति स्वरूप बच्चे हैं, उनके चेहरे द्वारा रूहानी प्रसन्नता के वायब्रेशन अन्य आत्माओं तक पहुँचते हैं और वे भी शान्ति और शक्ति की अनुभूति करते हैं। जैसे फलदायक वृक्ष अपने शीतलता की छाया में मानव को शीतलता का अनुभव कराता है और मानव प्रसन्न हो जाता है, ऐसे आपकी प्रसन्नता के वायब्रेशन अपने प्राप्तियों की छाया द्वारा तन-मन के शान्ति और शक्ति की अनुभूति कराते हैं।

स्लोगनः- जो स्मृति स्वरूप रहते हैं उन्हें कोई भी परिस्थिति खेल अनुभव होती है।

''मीठे बच्चे – याद की यात्रा में टाइम देते रहो तो विकर्म विनाश होते जायेंगे, सबसे ममत्व मिट जायेगा, बाप के गले का हार बन जायेंगे''

प्रश्नः- गॉड फादर द्वारा तुम बच्चे किन दो शब्दों की पढ़ाई पढ़ते हो? उन दो शब्दों में कौन-सा राज़ समाया हुआ है?

उत्तरः- गॉड फादर तुम्हें इतना ही पढ़ाता कि – हे आत्मायें, 'शरीर का भान छोड़ो' और 'मुझे याद करो' – यह दो शब्दों की पढ़ाई इसीलिए पढ़ाई जाती है क्योंकि अब तुम्हें इस पुरानी दुनिया में पुरानी खाल नहीं लेनी है। तुम्हें नई दुनिया में जाना है। मैं तुम्हें साथ ले चलने आया हूँ, इसलिए देह सहित सब कुछ भूलते जाओ।

गीतः- तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) सपूत आज्ञाकारी बन विजय माला में पिरोना है। बाप को अपना कखपन दे, बलिहार हो, सबसे ममत्व मिटा देना है।
2) अंतकाल में एक बाप ही याद रहे, उसके लिए और सबसे बुद्धियोग तोड़ निरन्तर बाप की याद में रहने का पुरुषार्थ करना है।

वरदानः- सर्व खजानों को स्वयं में समाकर, दिलशिकस्त-पन वा ईर्ष्या से मुक्त रहने वाले सदा प्रसन्नचित भव

बापदादा ने सभी बच्चों को समान रूप से सब खजाने दिये हैं लेकिन कोई उन प्राप्तियों को स्वयं में समा नहीं सकते व समय पर कार्य में लगाना नहीं आता तो सफलता दिखाई नहीं देती, फिर स्वयं से दिलशिकस्त हो जाते हैं, सोचते हैं शायद मेरा भाग्य ही ऐसा है। उन्हें फिर दूसरों की विशेषता वा भाग्य को देख ईर्ष्या उत्पन्न होती है। ऐसे दिलशिकस्त होने वा ईर्ष्या करने वाले कभी प्रसन्न नहीं रह सकते। सदा प्रसन्न रहना है तो इन दोनों बातों से मुक्त रहो।

स्लोगनः- स्वार्थ के बिना सच्चे दिल से सेवा करने वाले ही स्वच्छ आत्मा हैं।

''मीठे लाडले बच्चे – बाप आये हैं तुम्हारे लिए स्वर्ग की नई दुनिया स्थापन करने, इसलिए इस नर्क से दिल न लगाओ, इनको भूलते जाओ''

प्रश्नः- रहमदिल बाप तुम बच्चों पर किस रूप से कौन-सा रहम करते हैं?

उत्तरः- बाबा कहते हैं – मैं बाप रूप से मीठी सैक्रीन बन तुम बच्चों को इतना प्यार देता हूँ जो दुनिया में दूसरा कोई भी दे न सके। मैं तुम्हें पवित्र प्यार की दुनिया का मालिक बना देता हूँ। टीचर बन तुम्हें ऐसी पढ़ाई पढ़ाता हूँ जो तुम बहिश्त की बीबी बन जाते हो। यह पढ़ाई है मनुष्य से देवता बनने की। यह ज्ञान रत्न तुम्हें विश्व का मालिक बना देते हैं।

गीतः- कौन है माता, कौन है पिता...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बुद्धि से बेहद का सन्यास करना है। पुरानी देह सहित जो कुछ इन आँखों से दिखाई देता है उनसे ममत्व निकाल बाप और स्वर्ग को याद करना है।

2) पढ़ाई को अच्छी रीति धारण कर बुद्धि को सतोप्रधान बनाना है। मुरली ही पढ़ाई है। मुरली पर बहुत-बहुत ध्यान देना है।

वरदानः- भाग्य की नई-नई स्मृतियों द्वारा पुरुषार्थ में रमणीकता का अनुभव करने वाले मन दुरुस्त भव

ब्राह्मण जीवन में लास्ट जन्म होने के कारण शरीर से चाहे कितने भी कमजोर या बीमार हैं, लेकिन मन सबका दुरुस्त है। उमंग-उत्साह से उड़ने वाला है। पावरफुल मन की निशानी है – सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जाए। इसके लिए सदा अपने भाग्य के गीत गाते उड़ते रहो। अमृतवेले से भाग्य की नई-नई बातें स्मृति में लाओ। कभी किसी प्राप्ति को सामने रखो, कभी किसी... तो पुरुषार्थ में रमणीकता आ जायेगी। बोर नहीं होंगे, नवीनता का अनुभव करेंगे।

स्लोगनः- आगे पीछे सोच समझकर हर कर्म करो तो सफलता प्राप्त होती रहेगी।

''मीठे बच्चे – तुम अभी टिवाटे पर खड़े हो, एक तरफ है दु:खधाम, दूसरे तरफ है शान्तिधाम और तीसरे तरफ है सुखधाम, अब जज करो हमें किधर जाना है?''

प्रश्नः- किस निश्चय के आधार पर तुम बच्चे सदा हर्षित रह सकते हो?

उत्तरः- सबसे पहला निश्चय चाहिए कि हम किसके बने हैं! बाप का बनने में कोई वेद-शास्त्र आदि पुस्तकें पढ़ने की दरकार नहीं है। दूसरा निश्चय चाहिए कि हमारा कुल सबसे श्रेष्ठ देवता कुल है– इस स्मृति से सारा चक्र याद आ जायेगा। बाप और चक्र की स्मृति में रहने वाले सदा हर्षित रहेंगे।

गीतः- किसी ने अपना बनाके मुझको...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) सर्विस का शौक रखना है। बीमारी में भी बाप की याद में रहना है और दूसरों को भी याद दिलाना है। मुख से ज्ञान दान करते रहना है।
2) पक्का मातेला बनना है अर्थात् एक बाप की ही याद में रहना है। सवेरे-सवेरे उठ विचार सागर मंथन करना है। दूसरा कोई भी याद न आये।

वरदानः- अपनी शुभ और शक्तिशाली भावनाओं द्वारा विश्व परिवर्तन करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

आप बच्चों के मन में सदा यही शुभ भावना है कि सर्व का कल्याण हो। हर आत्मा अनेक जन्म सुखी हो जाए, प्राप्तियों से सम्पन्न हो जाए। आपकी इस शुभ और शक्तिशाली भावना का फल विश्व की आत्माओं को परिवर्तन कर रहा है, आगे चल प्रकृति सहित परिवर्तन हो जायेगा क्योंकि आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं को ड्रामानुसार प्रत्यक्षफल प्राप्त होने का वरदान है, इसलिए जो भी आत्मायें आपके संबंध-सम्पर्क में आती हैं वह उसी समय शान्ति वा स्नेह के फल की अनुभूति करती हैं।

स्लोगनः- त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहकर निर्णय करो तो हर कर्म में सफलता प्राप्त होगी।

"परमात्म मिलन मेले की सौगात – ताज, तख्त और तिलक"

❖ आज बेहद का बाप बेहद में सभी बच्चों को देख रहे हैं। बेहद का बाप है और आप सभी भी बेहद के मालिक सो बालक हो। मेले तो बहुत होते ही हैं लेकिन परमात्म मिलन मेला एक ही संगमयुग पर होता है।

❖ भाग्य विधाता द्वारा जन्म होना – ये सबसे नम्बरवन भाग्य है। फिर शिक्षक डायरेक्ट परम आत्मा है! क्या शिक्षा दी? आपको क्या बना दिया? त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ। सतगुरू द्वारा महामन्त्र भी मिला और सर्व वरदान भी मिले।

❖ राज्य की निशानी ताज, तख्त और तिलक होता है। चाहे नये हो या पुराने हो लेकिन मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ – सदा स्मृति का तिलक लगा हुआ ही है। मैं तिलकधारी हूँ, मैं विश्व कल्याण के जिम्मेवारी का ताजधारी हूँ। और सदा बाप के दिलतख्तनशीन।

❖ बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा योगी बच्चा हो, युद्ध वाला नहीं। बापदादा को बच्चों के युद्ध की मेहनत अच्छी नहीं लगती। परमात्म बच्चे तो सदा मौज में रहने वाले हैं, मजे में रहने वाले हैं, युद्ध की मेहनत वाले नहीं। तो इस वर्ष सभी का चार्ट हो – सदा राज्य अधिकारी। अधीनता समाप्त।

वरदान:- एकान्त और एकाग्रता के अटेन्शन द्वारा तीव्रगति से सूक्ष्म सेवा करने वाले सच्चे सेवाधारी भव

दूर बैठे बेहद विश्व के आत्माओं की सेवा करने के लिए मन और बुद्धि सदा फ्री चाहिए। छोटी-छोटी साधारण बातों में मन और बुद्धि को बिजी नहीं करो। तीव्रगति की सूक्ष्म सेवा के लिए एकान्त और एकाग्रता पर विशेष अटेन्शन दो। बिजी होते भी बीच-बीच में एक घड़ी, दो घड़ी निकाल एकान्त का अनुभव करो। बाहर की परिस्थिति भल हलचल की हो लेकिन मन-बुद्धि को जिस समय चाहो एक के अन्त में सेकण्ड में एकाग्र कर लो तब सच्चे सेवाधारी बन बेहद सेवा के निमित्त बन सकेंगे।

स्लोगन:- ज्ञानी तू आत्मा वह है जो ज्ञान के हर राज़ को समझकर राजयुक्त, युक्तियुक्त और योगयुक्त हो कर्म करे।